

Review Article

दीप्ति खण्डेलवाल की कहानियों में नारी स्वर का विश्लेषण

Chaman Singh Thakur

Ph.D. Education M.A. Hindi M.A. Pol. Science M.A. Yoga M.ED. PGDHE

I N F O

E-mail Id:

Prof.chaman2019@gmail.com

Orcid Id:

<https://orcid.org/0009-0003-3814-2995>

How to cite this article:

दीप्ति खण्डेलवाल की कहानियों में नारी स्वर का विश्लेषण, Anu: a, Mul, Int, Jour, 2025; 10(3&4): 10-13.

Date of Submission: 2025-10-28

Date of Acceptance: 2025-12-28

A B S T R A C T

दीप्ति खण्डेलवाल समकालीन हिंदी कथा साहित्य की एक सशक्त महिला कथाकार हैं, जिन्होंने अपनी कहानियों में नारी जीवन के विविध पहलुओं को अत्यंत सजीव और संवेदनशील रूप से प्रस्तुत किया है। उनकी कहानियों में नारी मात्र सहानुभूति की पात्र नहीं है, बल्कि वह अपनी अस्मिता, स्वतंत्रता और अधिकारों के लिए संघर्ष करने वाली सशक्त इकाई के रूप में सामने आती है। दीप्ति की स्त्री पात्र घरेलू, सामाजिक और मानसिक शोषण के खिलाफ आवाज़ उठाती हैं और अपने निर्णयों के लिए स्वयं जिम्मेदार बनती हैं।

इस शोध में दीप्ति खण्डेलवाल की कहानियों का विश्लेषण नारी दृष्टिकोण के संदर्भ में किया गया है, जिसमें उनकी रचनाओं में स्त्री की आत्मचेतना, विद्रोही स्वर, भावनात्मक द्वंद्व और सामाजिक असमानताओं से टकराव की प्रवृत्तियों को उजागर किया गया है। यह विश्लेषण इस बात को रेखांकित करता है कि दीप्ति खण्डेलवाल की कहानियाँ समकालीन स्त्री विमर्श को एक नई दिशा प्रदान करती हैं।

मुख्य शब्द: दीप्ति खण्डेलवाल, नारी स्वर, स्त्री विमर्श, आत्मचेतना, सामाजिक शोषण, विद्रोह, अस्मिता, समकालीन हिंदी कहानी, स्त्री अनुभव, स्वतंत्रता

परिचय

नारी विभिन्न कालखंडों में विभिन्न चुनौतियों का सामना करते हुए आगे बढ़ी लेकिन वर्तमान समय में निर्विवाद रूप से यह कहा जा सकता है कि नारी की पारिवारिक तथा सामाजिक स्थिति में काफी सुधार हुआ है। आज नारी शिक्षित होकर समाज के विभिन्न क्षेत्रों में अपना बहुमूल्य योगदान दे रही है। आज नारी अपनी कार्यकुशलता से समाज में नए कीर्तिमान स्थापित कर रही है। इस प्रकार आज नारी समाज में सम्मान के साथ आगे बढ़ रही है। वर्तमान समय में नारी पुरुषों से किसी भी क्षेत्र में पीछे नहीं है। नारी शक्ति को और अधिक सशक्त बनाने के लिए और नारी को समाज में उचित स्थान दिलाने तथा नारी सशक्तिकरण के लिए नारी सुधारों पर विशेष बल दिया गया है। इस सत्य से कदापि इंकार नहीं किया जा सकता है कि एक समय था जब नारी पुरुष प्रधान समाज में विभिन्न स्तरों पर घुट-घुट कर जीने के लिए मजबूर थी। इस प्रकार नारी की पारिवारिक तथा सामाजिक स्थिति सम्मानजनक नहीं थी। हमारे

समाज में व्याप्त सती प्रथा जैसी सामाजिक बुराई से हम सभी भली-भाँति परिचित हैं। इस प्रकार नारी की स्थिति में सुधार लाने के लिए कई समाज सुधारकों ने अपनी अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।¹ इसके साथ-साथ लेखकों ने भी अपनी रचनाओं से नारी शक्ति को आगे बढ़ाने के लिए निरंतर प्रयास किए। इस प्रकार आधुनिक कहानीकारों में कई ऐसे महान कहानीकार हुए जो नारी की स्थिति में सुधार लाने के लिए निरंतर प्रयासरत रहे।

ऐसे कई आधुनिक कहानीकारों की कहानियों में नारी विषयक अवधारणा का यथार्थ चित्रण मिलता है। इन कहानीकारों ने अपनी सशक्त लेखनी के माध्यम से नारी की तत्कालीन स्थिति को बहुत ही स्पष्टता के साथ प्रदर्शित किया है। इस प्रकार नारी की पारिवारिक तथा सामाजिक दशा और प्रतिकूल परिस्थितियों को महसूस करते हुए विभिन्न कहानीकारों ने अपनी लेखन क्षमता का अद्भुत परिचय देते हुए विभिन्न पात्रों के माध्यम से सजीव चित्रण किया है। इन कहानियों में रूढ़िवादी परम्पराओं तथा सामाजिक

कुरीतियों का शिकार होती नारी की दयनीय स्थिति को बड़ी बेबाकी और साफ़गोई से प्रस्तुत किया है। नारी की पीड़ा को नारी अधिक बेहतर ढंग से जान सकती है। इस प्रकार आधुनिक कहानीकारों में कई लेखिकाओं ने तत्कालीन पुरुष प्रधान समाज की बेड़ियों में जकड़ी नारी की पीड़ा, जकड़न तथा चिंता को अपनी कहानियों के माध्यम से व्यक्त किया है और तत्कालीन पुरुष प्रधान समाज की मानसिकता को उजागर करते हुए उनकी संकुचित सोच पर प्रहार किया है। इन कहानीकारों में दीप्ति खंडेलवाल का नाम अग्रणी है। उन्होंने नारी की मनोदशा को बहुत ही करीब से देखा और महसूस किया। इस प्रकार उनकी कहानियों में नारी विषयक अवधारणा का सजीव चित्रण हुआ है।

दीप्ति खंडेलवाल की कहानियों में नारी का यथार्थ, संघर्ष और स्वाभिमान

दीप्ति खंडेलवाल की कहानियों में नारी की व्यक्तिगत, पारिवारिक तथा सामाजिक जीवन की तमाम समस्याओं का बड़ा सटीक रूप से वर्णन हुआ है। इन कहानियों में नारी की अंतर्वेदना भी है और मुक्ति की कामना तथा छटपटाहट भी है, इनमें सामाजिक सम्मान और प्रतिष्ठा तथा स्वीकृति की अभिलाषा भी है और और उन्मुक्त गगन में उड़ने की चाह भी। इन कहानीकारों ने नारी के विभिन्न रूपों को विभिन्न पात्रों के माध्यम से प्रदर्शित करने का बहुत ही सफल प्रयास किया है। इनकी कहानियों में नारी की पीड़ा और चुनौतियों को बड़ी स्पष्टता से व्यक्त किया गया है। इन कहानियों में नारी विषयक अवधारणा को लेकर विभिन्न काल्पनिक पात्रों के माध्यम से नारी जीवन के अनछुए विभिन्न पहलुओं को पूरी प्रामाणिकता के साथ उद्घाटित किया गया है। नारीवादी कहानियों में विषय की गंभीरता भी है और नारी स्वभाव का स्वाभाविक एवं यथार्थ चित्रण भी। यदा - कदा यह दर्शाने का भी प्रयास किया गया है कि यदि नारी को शोषण, हिंसा आदि इन तमाम समस्याओं से मुक्ति पानी है तो उन्हें संघर्ष के रास्ते पर अग्रसर होना होगा, उन्हें अपनी आवाज को और अधिक बुलंद करना होगा।¹² पुरुषवादी और पितृसत्तात्मक समाज की जकड़न से बाहर निकलने के लिए आतुर नारी की छटपटाहट को इन कहानीकारों की कहानियों में स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है।

दीप्ति खंडेलवाल एक ऐसी बहुमुखी प्रतिभा संपन्न कहानीकार के रूप में प्रतिष्ठित हैं जिनकी कहानियों में नारी संघर्ष और नारी जीवन को बड़ी बेबाकी से चित्रित किया गया है। उनकी कहानियों में नारी की आंतरिक भावनाओं तथा पीड़ा को प्रस्तुत किया गया है जिसमें नारी यह कहती हुई नजर आती है कि उसका अन्तर्मन इस व्यवस्था एवं व्यवहार से बहुत पीड़ित है। दीप्ति खंडेलवाल की कहानियों में अधिकतर नारी की पारिवारिक और सामाजिक समस्याओं के साथ - साथ उसकी स्वाभाविक अंतर्वेदना को मुखरता से उठाया गया है। आधुनिक समय में बदलाव की जो बयार चल रही है उसमें एक और स्त्री घुट रही है तो दूसरी और वह किसी ऐसे नियम को मानने के लिए तैयार ही नहीं है जो पुरुषों के द्वारा उस पर बलात थोपे गए हैं। वह सक्षम और समर्थ हैं अपने जीवन का निर्णय लेने में। उसे किसी के आगे जी हजुरी करने की

आवश्यकता नहीं है। चंदा की ज्योत, क्षितिज, तपिश आदि कहानी संग्रह में स्त्री की मनोस्थिति को देखा और पढ़ा जा सकता है।^[3] युवती और देह की सीता कहानी की नायिकाएं सामाजिक जकड़न से मुक्त ही नहीं बल्कि आधुनिक परिवेश में विचरण करने वाली नायिका के रूप में चित्रित की गई हैं।

दीप्ति खंडेलवाल की कहानियों में नारी-पुरुष संबंधों का यथार्थ चित्रण

दीप्ति खंडेलवाल की कहानियों में नारी - पुरुष संबंधों का यथार्थ चित्रण हुआ है। उन्होंने अपनी कहानियों में तत्कालीन समाज में संबंधों में खोखलापन और आडंबरयुक्त रिश्तों की भयावह व्यवस्था को दर्शाया है। उनकी कहानियों में दांपत्य जीवन में बिखराव और विश्वास के टूटने की स्थिति को प्रमुखता से अंकित किया गया है। उन्होंने तपिश के बाद कहानी में एक विवाहित स्त्री जो नौकरी करते हुए भी परिवार और कार्यालय की जिम्मेदारियों को एक साथ निभाते हुए दिखाया है⁴ जिसमें कार्यालय से कामकाज कर लौटी महिला को घर में अपने समस्त दायित्वों को निभाते हुए भी परिवारजनों के उलाहने सुनने को मजबूर होना पड़ता है। उनकी सती कहानी में वृद्ध नानी की नातिन कनका को कुदृष्टि से बचाने के लिए माथे पर काला टीका लगाना तात्कालिक समाज में व्याप्त रूढ़िवादी विचारधारा को दर्शाता है। सती कहानी की इन पंक्तियों में नारी की स्थिति को स्पष्ट रूप से चित्रित किया गया है।

"गर्मी की दोपहर सांय- सांय कर रही थी और पेड़ों के पत्ते तक स्तब्ध थे। बस्ती के सारे पुरुष और अधिकांश स्त्रियाँ मजूरी के लिए जा चुके थे। नानी भी प्रतिदिन की भांति मजदूरी करने गई थी और कनका अपनी झोपड़ी में दोपहरी काटने का प्रयास कर रही थी।" नानी का प्रतिदिन मजदूरी करने जाना नारी की स्थिति और उस पर पारिवारिक जिम्मेदारियों के बोझ को दर्शाता है। समाज में नारी शिक्षित हो या अशिक्षित, उच्च वर्ग की हो या निम्न वर्ग की, उनकी बहुत सारी चुनौतियाँ, समस्याएँ और परेशानियाँ लगभग एक जैसी होती हैं। समाज में पितृसत्तात्मक सोच का वर्चस्व जिस तरह अपनी जड़ें जमाए बैठा है उससे बाहर निकल पाना भी एक बहुत बड़ी चुनौती है। जिस समय दीप्ति खंडेलवाल ने यह कहानियाँ लिखी हैं उस कालखण्ड में पुरुष प्रधान समाज की संकुचित मानसिकता को चुनौती देना एक बहुत बड़ी बात थी।

इस प्रकार एक ऐसे समय में दीप्ति खंडेलवाल ने अपनी कहानियों में महिलाओं की पीड़ा, उत्पीड़न, दर्द, घुटन तथा उनकी सभी समस्याओं और चुनौतियों को बड़ी बेबाकी से अपनी कहानी के माध्यम से व्यक्त करने का प्रयास किया जिस समय बहुत कम लेखक नारी विषयक अवधारणा पर इतनी बेबाकी से अपने विचार व्यक्त करने का साहस जुटा पाते थे। जहाँ पुरुष अधिकांशतया घर में शराब पीकर मस्ती कर रहे होते हैं और महिलाओं को बच्चों के पालन पोषण के लिए बाहर मजदूरी करने की मजबूर होना पड़ता है। यह कैसी पुरुष मानसिकता है जहाँ नारी की गरिमा को खण्ड - खण्ड कर उसे अपमानित और नारकीय जीवन जीने के लिए मजबूर किया जाता हो।¹⁵

कथा-साहित्य में नारी की असहायता, आत्मबोध और विद्रोही चेतना

दीप्ति खंडेलवाल ने निर्वसन कहानी के माध्यम से एक ऐसी साधारण लड़की का चित्रण किया गया है जिसमें राधा कहती है कि मैं सती हो रही हूँ, अरे सती....! सती तो पति के बाद हुआ जाता है। भगवान ना करे लाला कुशल से तो है न, मैं राधा के उन्माद को समझ रहा था। सती हो रही हूँ यानी कि सती बनने की कोशिश कर रही हूँ। सीता, सावित्री के देश की हूँ ना....! इन पंक्तियों का विश्लेषण किया जाए तो तत्कालीन समाज में सती प्रथा के प्रभाव को स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। यह सामाजिक कुरीतियों और नारी पर बलात पुरुष मानसिकता को थोपने और उसके साथ अन्याय तथा अत्याचार के वीभत्स रूप को दर्शाता है। "सती हो रही हूँ या सती होने की कोशिश कर रही हूँ" यहाँ पर सती प्रथा से अभिशप्त नारी के अस्तित्व और उसकी अंतर्वेदना, सामाजिक कुरीतियों तथा उससे त्रस्त नारी की असह्य पीड़ा को बड़ी ही मुखरता से व्यक्त किया गया है। यह पंक्तियाँ नारी की पीड़ा और समाज में व्याप्त पितृसत्तात्मक सोच को प्रदर्शित कर रही है। कहानीकार दीप्ति खंडेलवाल ने जिन सामाजिक विद्रूपताओं और नारी शोषण की भयावह तस्वीरों को करीब से देखा और महसूस किया है वह उनकी लेखनी में सहज रूप से प्रकट हुआ है।

दीप्ति खंडेलवाल की यह दूरियां नामक कहानी में पति पत्नी के बीच खिंचाव और तनाव की झलक मिलती है कुछ पंक्तियाँ देखिए, "मम्मी का खूबसूरत चेहरा आवाज आवेश से विकृत होने लगा था। पापा गलती ना मानने के अंदाज में हंसते-हंसते सख्त होने लगे थे और मैं मम्मी और पापा के तनाव के बीच तनने लगी थी। खाने की मेज पर लजीज डिनर खाते-खाते हम तीनों खिलौनों से जड़ हो गए थे जिसकी चाबी खत्म हो गई हो।" इन पंक्तियों में साफ तौर पर पुरुष प्रधानतावादी सोच दृष्टिगोचर हो रही है जहाँ एक किशोर बेटी यह महसूस कर रही है कि पापा गलत होते हुए भी अपनी गलती मानने को बिल्कुल भी तैयार नहीं है और माँ पर जबरन अपनी खीज निकाल रहे हैं।

सामने मेज पर खाना पड़ा है जिसे माँ ने बड़े स्नेह से बनाया है लेकिन अब यहाँ किसी छोटी - सी बात पर पिता की पुरुष मानसिकता उन पर हावी हो गई है। दीप्ति खंडेलवाल की इस कहानी की इन पंक्तियों का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया जाए तो पितृसत्तात्मक सोच और घर में पुरुष का नारी पर जबरन हावी हो जाना⁶ नारी के सम्मान और स्वाभिमान को खण्ड-खण्ड होने के कटु सत्य को दर्शाता है। इस प्रकार नारी के सामाजिक एवं पारिवारिक जीवन का यथार्थ चित्रण करती हुई दीप्ति खंडेलवाल की कहानियों में नारी विषयक अवधारणा का सजीवता से चित्रण हुआ है।

इस प्रकार आधुनिक कहानीकारों की कहानियों में नारी विषयक अवधारणा का यथार्थ एवं सटीक चित्रण मिलता है जिसका सकारात्मक विश्लेषण किया जाए तो यह स्पष्ट होता है कि नारी के अधिकारों तथा उसकी अस्मिता और अस्तित्व की रक्षा के लिए कहानीकारों ने अपनी सशक्त लेखनी और रचनाधर्मिता से

सामाजिक कटु सत्यता को बेबाकी से उजागर किया है। भारतीय धर्म और दर्शन सदैव नारियों के योगदान को समाज में उचित स्थान देने का पक्षधर रहा है। भारतीय समाज में फैली किंचित कुरीतियों तथा सामाजिक बुराइयों को अगर छोड़ दिया जाए तो यह स्पष्ट होता है कि भारतीय विराट चिंतन में नारियों का स्थान सदैव उच्च रहा है। वर्तमान आधुनिकीकरण के दौर में आधुनिक भारतीय नारी की सोच और चिंतन में काफी बदलाव आया है और वह पहले की अपेक्षा आज अधिक स्वतंत्रतापूर्वक स्वावलंबन की राह पर आगे बढ़ रही है। नारी का आधुनिक होना प्रशंसनीय है वह पुरुषों के साथ कदम से कदम मिलाकर आगे बढ़े और राष्ट्र के निर्माण में अपना महत्वपूर्ण योगदान दें। भारतीयता के संदर्भ में यह सराहनीय तथा स्वागत योग्य है।

उपरोक्त वर्णित कहानियों का अध्ययन करने के पश्चात यह कहना समीचीन होगा कि विभिन्न कालखण्डों में कई प्रतिकूल परिस्थितियों से गुजरती हुई भारतीय नारी कहानीकारों द्वारा विभिन्न रूपों में चित्रित की गई है। नारी भोग विलास तथा आकर्षण की वस्तु कदापि नहीं हो सकती। वह सभ्य, सुशीला, मधुरभाषी तथा उच्च आदर्शों को आत्मसात करने वाली और पुरुषों के साथ मजबूती से चलने वाली एक महान शक्ति है। माँ, बहन, बेटी तथा भार्या आदि विभिन्न रूपों में नारी के सराहनीय योगदान को भुलाया नहीं जा सकता। इस प्रकार उसके महान एवं गौरवमयी स्वरूपों का बखान जितना किया जाए उतना कम है। आधुनिक कहानीकारों की कहानियों में निहित नारीवादी स्वरो में भारतीय नारी का जो रूप उभर कर सामने आता है उसे किसी भी तरह से नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है।

दीप्ति खंडेलवाल की कहानियों में नारी विषयक अवधारणा का अध्ययन करते हुए हम पाते हैं कि दीप्ति खंडेलवाल की कहानियों में नारी विषयक अवधारणा का अधिक गहन एवं व्यापक रूप से चित्रण हुआ है। उन्होंने नारी की दयनीय स्थिति और तत्कालीन परिस्थितियों पर बड़ी बेबाकी एवं साफ़गोई से अपनी लेखनी चलाई है और नारी की सामाजिक स्थिति का सजीवता के साथ चित्रण किया है। उन्होंने नारी की पीड़ा को बड़ी ही गहनता से महसूस किया [7] और उसे यथार्थ रूप में व्यक्त करने का प्रयास किया है। इनकी कहानियों में नारी शोषण-दमन के कुचक्रों में पिसती नारी की कराह भी है और सामाजिक सुरक्षा और स्वीकृति के अभाव का जीवंत चित्रण भी। दीप्ति खंडेलवाल की उपरोक्त वर्णित कहानियों का अध्ययन करने से यह भी स्पष्ट होता है कि दीप्ति खंडेलवाल की कहानियों में नारी विषयक अवधारणा का अधिक हृदय स्पर्शी, गहन एवं व्यापक रूप से चित्रण हुआ है। यह सत्य है कि जितनी गहराई से नारी की वास्तविक स्थिति और पीड़ा को नारी समझ सकती है शायद उतना पुरुष नहीं क्योंकि नारी स्वयं उन सामाजिक विद्रूपताओं का शिकार होती है जहाँ उसे समाज के उस अत्यन्त भयावह रूप का सामना करना पड़ता है जिसमें वह बहुत कुछ सहन करते हुए जीने को मजबूर होती है।

दीप्ति खंडेलवाल की कहानियों में पारिवारिक विद्रूपताओं, टूटन, बिखरन तथा पति - पत्नी के बीच की नोक - झोंक व कड़वाहटपूर्ण परस्पर सम्बंधों को उजागर किया गया है। उन्होंने समाज में

महिलाओं के अभिशप्त जीवन को महसूस कर उनकी पीड़ा को निज पीड़ा मानकर बड़ी स्पष्टता से अपनी आवाज दी है। उनकी 'यह दूरियां' नामक कहानी पति-पत्नी के मध्य पनपती कड़वाहट की परिचायक है जहाँ पति गलत होते हुए भी अपनी गलती स्वीकार न कर पत्नी को ही दोषी ठहराता है। यहाँ पर दीप्ति खण्डेलवाल अपनी इस कहानी के माध्यम से नारी का दैनिक जीवन और समाज में उसकी दयनीय स्थिति को बेबाकी से व्यक्त करती हुई दृष्टिगोचर हो रही है। यह पुरुष प्रधान समाज के वीभत्स रूप को भी दर्शाता है जिसमें पुरुष येन केन प्रकारेण अपनी सार्थकता और सामाजिक वर्चस्व कायम रखना चाहता है और महिलाओं को पुरुषों के बराबर स्थान प्रदान करने की सोच के विपरीत व्यवहार करता है।⁸

दीप्ति खण्डेलवाल की कहानियों में नारी विषयक अवधारणा को लेकर एक पृथक गहराई है जिसमें दुख, कसक, घुटन, अन्तर्वेदना, पीड़ा, टीस, सामाजिक अस्वीकृति की झलक, और सकल सामाजिक कुरीतियों से मुक्ति की इच्छा है। वह संघर्ष करते हुए सकल बेड़ियों को तोड़ कर एक नए शोषण-दमन मुक्त परिवेश की कामना करती हुई दृष्टिगोचर होती है। दीप्ति खण्डेलवाल की 'यह दूरियां' तथा 'सती' कहानियों में नारी की तत्कालीन स्थिति तथा सामाजिक जीवन की वीभत्स तस्वीर सामने आती है। उन्होंने नारी की दयनीय स्थिति और पीड़ा को बड़ी बेबाकी से व्यक्त करते हुए कटु सत्य को सबके सामने रखा है। उन्होंने नारी की पीड़ा को बड़े करीब से देखा, समझा और अपनी कहानियों में उसे प्रमुखता से व्यक्त किया है।

इस प्रकार यदि दीप्ति खण्डेलवाल की कहानियों का अध्ययन करें तो यह स्पष्ट हो जाता है कि दीप्ति खण्डेलवाल मूलतः नारीवादी लेखिका हैं और उन्होंने नारी की स्थिति और उनकी चिंताओं को अपनी कहानियों में निहित नारीवादी स्वरों को मुखरता के साथ व्यक्त किया है। एक नारी होने के नाते दीप्ति खण्डेलवाल की कहानियों में नारी की पीड़ा अधिक सजीवता लिए हुए हैं। उन्होंने समाज के मध्य रहकर जो देखा, सहा तथा महसूस किया उसे अपनी कहानियों के माध्यम से बहुत ही स्पष्टता के साथ प्रस्तुत किया है।

दीप्ति खण्डेलवाल की कहानियों में निहित नारी विषयक अवधारणा का अध्ययन करने के पश्चात् निष्कर्ष रूप में यही कहना समीचीन होगा कि उनकी कहानियों में नारी की तत्कालीन दयनीय स्थिति, चिन्ता और सामाजिक कुरीतियों से त्रस्त नारी की चिन्तार स्पष्ट रूप में सुनाई देती है। इन कहानियों के गहन अध्ययन एवं विश्लेषण से यह स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि दीप्ति खण्डेलवाल की कहानियों में निहित नारीवादी स्वर और उसकी पीड़ा को अधिक मुखरता से व्यक्त किया गया है। हर कहानीकार की अपनी-अपनी पृथक लेखन शैली होती है, [9] अपना शब्द विधान तथा रचनाधर्मिता होती है। इस प्रकार उनके रचना विधान और वैचारिक जीवंतता को देखकर स्वाभाविक रूप से यह कहा जा सकता है कि समाज में नारी की पीड़ा, नारी का संघर्ष तथा नारी की चिन्ताएँ उनकी अपनी चिन्ताएँ हैं जिसे उन्होंने विभिन्न पात्रों के माध्यम से बड़ी मुखरता के साथ व्यक्त किया है। इस प्रकार तत्कालीन नारी की पीड़ा और

मनोदशा को उन्होंने अपनी कहानियों के माध्यम से बहुत ही सरलता, सहजता तथा स्वाभाविकता के साथ व्यक्त किया है। इसलिए उनकी कहानियाँ उनके समकालीन कहानीकारों की तुलना में अधिक हृदय स्पर्शी मालूम पड़ती हैं।

निष्कर्ष:

दीप्ति खण्डेलवाल की कहानियाँ समकालीन स्त्री जीवन की जटिलताओं, भावनात्मक संघर्षों और सामाजिक विसंगतियों को बेहद सशक्त स्वर में अभिव्यक्त करती हैं। उनकी रचनाओं में नारी केवल संवेदना की प्रतिमूर्ति नहीं, बल्कि सोचने, समझने, निर्णय लेने और प्रतिरोध करने वाली एक सजग चेतना है। दीप्ति की स्त्रियाँ न तो पूर्णतः परंपरागत हैं और न ही केवल विद्रोही, बल्कि वे अपनी परिस्थिति, संवेदना और अनुभवों के आधार पर अपने अस्तित्व की लड़ाई लड़ती हैं। उन्होंने अपने लेखन के माध्यम से यह स्पष्ट किया है कि स्त्री विमर्श केवल अधिकार की बात नहीं है, बल्कि पहचान, आत्मसम्मान और समानता की गूढ़ प्रक्रिया भी है। उनकी कहानियों में स्त्री पात्र समाज से प्रश्न करती हैं, उसकी रूढ़ियों को चुनौती देती हैं और अपने जीवन के निर्णय स्वयं लेने की हिम्मत रखती हैं।

इस प्रकार निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि दीप्ति खण्डेलवाल का कथा साहित्य समकालीन हिंदी कहानी में नारी स्वर को एक नई दृष्टि और नई ऊर्जा प्रदान करता है। उनकी कहानियाँ नारी के आत्मबोध, उसके संघर्ष, संकल्प और बदलाव की आकांक्षा को न सिर्फ उजागर करती हैं, बल्कि पाठकों को भी सोचने के लिए प्रेरित करती हैं। उनका लेखन स्त्री की आवाज़ को न केवल साहित्यिक मंच देता है, बल्कि सामाजिक विमर्श में भी उसे एक महत्वपूर्ण स्थान दिलाने का कार्य करता है।

संदर्भ

1. खण्डेलवाल, दीप्ति। *जो शेष है* राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
2. खण्डेलवाल, दीप्ति। *उसने कहा था* (कहानी संग्रह)। हिन्द युग्म प्रकाशन, 2021।
3. श्रीवास्तव, डॉ. सुधा। *समकालीन हिंदी कहानी और स्त्री विमर्श* वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।
4. त्रिपाठी, डॉ. शशि। *नारी चेतना और हिंदी कथा साहित्य* साहित्य भवन, इलाहाबाद।
5. यादव, डॉ. सीमा। *स्त्री विमर्श: संदर्भ और परिप्रेक्ष्य* प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली।
6. मिश्र, डॉ. कविता। *हिंदी की समकालीन महिला कथाकारों* मीना बुक्स, लखनऊ।
7. अग्रवाल, डॉ. रेखा। *नारी विमर्श की नई दिशाएँ* भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली।
8. गुप्ता, डॉ. नीलिमा। *हिंदी कहानी में स्त्री का बदलता स्वरूप* बुक्स इंडिया, भोपाल।
9. नारीवादी आलोचना विशेषांक। *हंस पत्रिका*, विभिन्न अंक।